Prof. Khushbu kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, lnmu

Class – B.A – 3 (H)

Paper – VI

Topic – अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का दृष्टिकोण (मार्टन कापलान)

Lecture – 1

मॉर्टन कापलान व्यवस्थावादी दृष्टिकोण का मुख्य व्याख्याता है। कापलान शक्ति राजनीति की धारणा को स्वीकार करता है तथा उसकी मान्यता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति व्यवहार की निश्चित प्रणाली द्वारा संचालित होती है। मॉर्टन कापलान ने जो व्यवस्था दृष्टिकोण दिया है उसके अनुसार यह परीक्षण करना होता है कि "जब अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं की व्यवस्था के अन्दर परिवर्तन होते हैं, तो अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के व्यवहार में क्या परिवर्तन होते हैं।"

मॉर्टन कापलान ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की व्याख्या करने के लिए 6 विभिन्न व्यवस्थाओं को बताया है, जो निम्नलिखित हैं —

(1) शक्ति-सन्तुलन व्यवस्था — शक्ति-सन्तुलन व्यवस्था 18वीं और 19वीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित 'शक्ति-सन्तुलन सिद्धान्त' से मिलती-जुलती है। यह एक लोकप्रिय व्यवस्था है। इसमें पाँच या छः बड़ी-बड़ी शक्तियों, कार्यकर्ताओं के बीच शक्ति सम्बन्धों से एक सन्तुलन स्थापित होता है तथा व्यवस्था में कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन नहीं होता। इस मॉडल के 6 आवश्यक नियम हैं —

(i) प्रत्येक राष्ट्र समझौते के माध्यम से अपनी क्षमताओं में वृद्धि करता है, युद्ध के माध्यम से नहीं।

(ii) प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने की क्षमताओं की वृद्धि करने के लिए अवसरों को गवाना नहीं है, बल्कि इनसे संघर्ष करता है।

(iii) व्यवस्था से किसी भी कार्यकर्ता को निकाला नहीं जाता।

(iv) एक कार्यकर्ता या कार्यकर्ताओं का समूह किसी ऐसे दूसरे समूह का या एक कार्यकर्ता का विरोध करता है जो बाकी की व्यवस्था में प्रमुखता या आधिपत्य की स्थिति ग्रहण कर लेता है अथवा ऐसा करने का प्रयत्न करता है।

(v) किसी भी कार्यकर्ता को राष्ट्रेत्तर संगठन के सिद्धान्तों पर चलने से रोकने के प्रयत्न किये जाते हैं।

(vi) किसी भी हारे हुये या कमजोर किये गये कार्यकर्ता को व्यवस्था में पुन: शामिल करना होता है, सभी आवश्यक कार्यकर्ताओं को सहयोगी मानना चाहिए।

ये छः नियम अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में संतुलन बनाये रखते हैं। काप्लान की मान्यता है कि इन नियमों को बनाये रखने में असफलता का अर्थ संतुलन में अव्यवस्था तथा अन्त में संतुलन की समाप्ति होना है। संतुलन की समाप्ति का अर्थ व्यवस्था की समाप्ति से है।

Khushbu Kumari 29th Aug. 2020